आपने लिखा

संदर्भ का 97वाँ अंक पढ़ा। हर बार की तरह इस बार के भी सभी लेख सारगर्भित और शिक्षा जगत के नए द्वार खोलने वाले रहे। सम्पादकीय टीम को इस बात के लिए बहुत-बहुत बधाई कि उन्होंने 'शिक्षकों की कलम से' नाम का कॉलम शुरू किया। यह कॉलम सही मायनों में शिक्षकों को उपयुक्त मंच देने की एक सकारात्मक पहल है। लेकिन कभी-कभी इस कॉलम में दो लेख छपते हैं और कभी तीन। खुशी होगी अगर सम्पादकीय टीम हर बार तीन आलेखों को जगह दे पाए।

इस अंक के आलेखों में 'उबासी क्यों आती है?' लेख ने उबासी को समझने और उस पर किए गए विभिन्न प्रयोगों को को सीधी-सादी भाषा में समझाने का सफल प्रयास किया है। वहीं 'नहीं दिए जाते रचनात्मकता के अवसर' में मनोहर चमोली जी ने खुद के स्तर पर किए गए प्रयासों में बच्चों की भागीदारी का सजीव और जीवन्त वर्णन किया है। साथ ही यह चिन्ता भी जताई है कि जिस तरह से स्कूलों में रटने का दबाव होता है उसमें रचनात्मकता की बलि चढ़ जाती है।

'अलग-अलग तरह से सवाल पूछने की अहमियत' बच्चों के नज़रिए को और खोलने के साथ-साथ अलग तरह से सवाल पूछने के नए तरीके भी सुझाता है जो अन्य शिक्षकों के लिए कक्षा में प्रयोग करने का अवसर भी देता है।

पुनः सम्पादकीय टीम को दिल से शुक्रिया।

महेश झरबड़े
मुस्कान संस्था, भोपाल

संदर्भ का 97वाँ अंक प्राप्त किया। नए अंक की प्रति हाथ में आते ही इसमें शामिल आलेखों को देखने का उत्साह होता है। इस अंक में मोटे तौर पर भाषा शिक्षण पर केन्द्रित सामग्री पढ़ने को मिली। विशेषकर सौरभ राय का आलेख 'भाषा शिक्षणः समग्र भाषा पद्धति, भाग-1', मनोहर चमोली का आलेख 'नहीं दिए जाते रचनात्मकता के अवसर' पढ़कर भाषा शिक्षण की प्रक्रियाओं, पद्धतियों और बच्चे के सीखने के तौर तरीकों को समझने में आसानी हुई। आलेखों की बुनावट इस प्रकार की है कि कक्षा-शिक्षण के व्यावहारिक अनुभवों को केन्द्र पर रखकर सैद्धान्तिक बातों को समझाने का प्रयास किया है। यह सही है कि भाषा को अक्षर, उच्चारण, व्याकरण आदि में बाँटने से कोई मतलब नहीं निकलता है। न ही ये सब किसी निश्चित क्रम में सीखे जा सकते हैं। भाषा सीखने का एक ही तरीका है, उसका ज़्यादा-से-ज़्यादा उपयोग किया जाए। कक्षा-कक्ष में आम तौर पर बच्चों को बातचीत करने से रोका जाता है। जबकि बच्चों की बातचीत कक्षा-कक्ष या अध्ययन-अध्यापन के लिए एक संसाधन बन सकती है।

अन्य आलेख जैसे अलका तिवारी का 'पत्तियाँ पानी बाहर फेंकती हैं', उदय मैत्रा का 'अलग-अलग तरीकों से सवाल...', माधव केलकर का 'आयदा फिफर की भारत यात्रा का वृत्तान्त' को पढ़कर मन को अच्छा लगा। हर बार की तरह 'संदर्भ' का अंक संग्रहणीय है। पूरी टीम को बधाई।

सिद्धार्थ कुमार जैन
अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन,
भोपाल

संदर्भ अंक-97 हमारे पुस्तकालय में देखने को मिला। अंक उठाते ही इसमें शामिल आलेखों की अनुक्रमणिका देखी और कुछ रोचक लेख पढ़ने के लिए उत्साहित हुई। आलेख 'नहीं दिए जाते रचनात्मकता के अवसर' और 'भाषा शिक्षणः समग्र भाषा पद्धति' तो एक ही बैठक में पढ़ डाले। लेखों को पढ़ते समय मेरे मन में कुछ विचार चल रहे थे।

मेरा भी सरकारी स्कूल में काम करने का कुछ सालों का अनुभव है और ये मुझे उन दिनों की याद दिलाने लगे। स्कूली ढाँचे में पाठ्यपुस्तकों और परीक्षा का इतना ज़बरदस्त आधिपत्य है कि अन्य प्रश्नों और बातों का स्थान या तो होता ही नहीं है या होता भी है तो न के बराबर। स्कूलों में भाषा शिक्षण के जो तरीके प्रचलित हैं वह भी वर्ण पद्धति पर आधारित हैं जो कि भाषा सीखने के क्रम को सिरे से खारिज करते हैं। इसी कारण कई बच्चे स्कूल में एक लम्बा समय बिताने के बाद भी पढ़ने-लिखने का बुनियादी कौशल प्राप्त नहीं कर पाते। शिक्षक भी इस बात को समझे बिना यह कवायद सालों साल करवाते रहते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि कई सारे बच्चे स्कूल में इसी कारण नहीं ठहर पाते और ड्रॉप आउट हो जाते हैं। सौरभ राय ने भाषा शिक्षण के पठन-पाठन की प्रक्रियाओं पर ज़ोर देते हुए भाषा की बारीकियों को सामने रखने की कोशिश की है।

इस तरह के आलेख पाठकों तक लाने और सोचने-विचारने पर मजबूर करने के लिए 'संदर्भ' टीम को साधुवाद।

प्रेरणा मालवीय
अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन

संदर्भ के 97वें अंक में माधव केलकर के लेख 'आयदा फिफर की भारत यात्रा का वृत्तान्त' में कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न उठाए गए हैं। लेख के अन्त में यह प्रश्न रखा गया 'हमारे यहाँ यात्रा वृत्तान्त क्यों नहीं लिखे गए? क्या हमारे लोगों को यात्रा वृत्तान्त लिखने का शौक नहीं था या उनके यात्रा वृत्तान्तों को हिफाज़त से संरक्षित नहीं किया जा सका?'।

इस सम्बन्ध में थोड़ी खोज-बीन और लोगों से बातचीत करने से कुछेक बातें मालूम हुईं। एक-एक करके ये इस प्रकार हैं-

- प्रोफेसर एस. मुज़फ्फर अली की 1966 में पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली से आई किताब 'द जियॉग्रफी ऑफ द पुराणाज़' में पुराणों में वर्णित भूगोल के बारे में विस्तार से विश्लेषण किया गया है। आम तौर पर पुराणों को भारतीय कथाओं और संस्कृति का कोश कहा जाता है और उनकी वैज्ञानिकता को लेकर भारी विवाद भी है। खैर, इसी पुस्तक के प्रथम अध्याय के अन्त में प्रोफेसर अली ने एक शीर्षक दिया है 'ट्रैवलर्ज़ अकाउंट्स' यानी यात्रियों के विवरण। प्रोफेसर अली मानते हैं कि यात्रियों के अलग-अलग तरह के धार्मिक और व्यापारिक विवरण पुराणों में वर्णित भौगोलिक जानकरी को प्रभावित कर रहे थे। इसका मतलब यह हुआ कि भारत में जो पुराण लिखे जा रहे थे उनमें यात्रियों के विवरणों का इस्तेमाल हो रहा था। वायु पुराण और मत्स्य पुराण में जो भारत से बाहर का विवरण दिया है वो बगैर यात्राओं के नहीं लिखा जा सकता था। लेकिन एक समस्या है, और वो यह कि यात्राएँ तो हो रही थीं और उनके

विवरणों का भी आपस में आदान-प्रदान हो रहा था पर इनका कोई ठोस शुद्ध लिखित स्वरूप शायद नहीं बन पाया। यानी दूसरे शब्दों में कहें तो यात्रा से लौटकर सिर्फ यात्रा के अनुभवों पर आधारित स्वतंत्र लेखन शायद नहीं किया जाता था, लेकिन उसे दूसरे किस्म के लेखन में प्रयोग ज़रूर किया जा रहा था, जैसे पुराण वगैरह।

- साहित्य अकादमी से एक पुस्तक प्रकाशित हुई थी 'ट्रैवल राइटिंग इन इंडिया', अर्थात् भारत में यात्रा लेखन। इसे शोभना भट्टाचार्य ने सम्पादित किया है। इसी पुस्तक में श्री के. सच्चिदानन्दन जी ने एक निबन्ध प्रस्तुत किया है 'ट्रैवल राइटिंग इन इंडिया - एन ओवरव्यू'। इस निबन्ध को पढ़ने से कुछ पुस्तकों के बारे में पता चला, जैसे सन्त नामदेव द्वारा लिखित 'तीर्थयात्रा' और श्री चक्रधर पर लिखी मराठी जीवनी 'लीला चरित्र' (1276) आदि में यात्रा विवरणों के पर्याप्त अंश मौजूद हैं। विद्यापति की 'भू-परिक्रमा' और 1493 में नेपाली में लिखित 'राजा गगारिराज की यात्रा' यात्रा विवरण शैली की उपस्थिति के पर्याप्त प्रमाण हैं। एक बात ध्यान रखनी होगी कि इन सब विवरणों में मुख्य रूप से भारत के भीतर के इलाकों का ही ज़िक्र है, विदेशों का नहीं।
- प्रोफेसर वासुदेव शरण अग्रवाल जी ने 1953 में प्राचीन संस्कृत के विद्वान पाणिनि के समय के भारत पर एक पुस्तक लिखी थी 'इंडिया ऐज़ नोन टु पाणिनि'। यहाँ ये ज़िक्र करना भी उचित होगा कि यह पुस्तक असल में प्रोफेसर अग्रवाल की पीएच.डी. (1941) और डी.लिट. (1946) के शोध प्रबन्धों को मिलाकर बनाई गई थी। इस पुस्तक में पाणिनि के लेखन में मौजूद भौगोलिक जानकारियों पर पूरा एक अध्याय है। चूँकि पाणिनि का काल चौथी शताब्दी ईसा पूर्व का है, तो इसका अर्थ यह हुआ कि ये सारी जानकारी करीब ढाई हज़ार साल पहले की हैं। पाणिनि पूरे भारत में मौजूद वनों, नदियों और जगहों का ज़िक्र करते हैं। प्रश्न यह है कि ये जानकारी जुटाने की प्रक्रिया क्या थी? सम्भावित रूप से, यात्रियों के आपसी संवाद और पाणिनि की स्वयं की यात्राएँ। पृष्ठ-17 पर प्रोफेसर अग्रवाल एक बात का प्रयोग करते हैं, 'तक्षशिला स्टाइल'। इस 'तक्षशिला स्टाइल' का क्या अर्थ है? इस शब्द का इशारा ये है कि तक्षशिला के विद्यार्थी पढ़ाई पूरी होने के बाद आंचलिक परम्पराओं को जानने के लिए दूर-दूर की यात्राएँ करते थे। पाणिनि भी तक्षशिला के पास के स्थान पर रहते थे और उन पर इस तरह की यात्राएँ करने की परम्परा का प्रभाव रहा होगा। यानी प्राचीन काल में यात्राओं को सीधे 'डायरीनुमा' अन्दाज़ में शायद प्रकाशित तो नहीं किया गया पर यात्रा में मिली जानकारियों का प्रयोग भरपूर हुआ।

अमनदीप वशिष्ठ
व्याख्याता (भौतिकी)
रोहतक, हरियाणा

संदर्भ का 97वाँ अंक मिला। पढ़ने के बाद लगा कि सुधि पाठकों का खयाल रखते हुए आलेख प्रकाशन अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण है। इस अंक का कलेवर भी बहुत ज्ञान वर्धक जानकारी से भरा हुआ है। चाहे मुखपृष्ठ हो या पिछला आवरण, दोनों की अहमियत रोचक लगी। मुखपृष्ठ पर चित्रों में उल्लू की विविधता को दिखाया

गया है। मैंने पिछले पत्र में माँग की थी कि रचनात्मकता पर आधारित जानकारी भरा आलेख प्रकाशित करें और मनोहर चमोली का लेख 'नहीं दिए जाते रचनात्मकता के अवसर' शायद उसकी पूर्ति करता है। इसमें खास तौर पर पुरानी पारम्परिक तरीके से चली आ रही लेखन प्रक्रिया के स्थान पर मौलिक लेखन को प्राथमिकता देने की गहराई पर ज़ोर दिया गया है।

सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षणों के दौरान शिक्षकों के द्वारा उठाए गए कुछ सवाल जिसका ज़िक्र मैंने पिछले पत्र में किया था, उस पर बना इस अंक का सवालीराम उन शिक्षकों का सम्मान है। मैंने उन शिक्षकों को जब यह अंक दिया तो उनकी आँखों में खुशी को महसूस भी किया। इसी अंक में सौरभ भाई के आलेख 'भाषा शिक्षणः समग्र-भाषा पद्धति' के माध्यम से वर्तमान भाषा शिक्षण पर बहुत बारीक अवलोकन प्रस्तुत किया है।

मुझे लगता है 'संदर्भ' का यह क्रम जारी रहे ताकि हम अधिक-से-अधिक शिक्षक मित्रों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण, समालोच-नात्मक चिन्तन और तर्कशीलता के लिए प्रेरित कर सकें।

नरेन्द्र नन्द
अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन
धमतरी, छत्तीसगढ़